International Journal of Applied Research 2016; 2(8): 126-127

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(8): 126-127
www.allresearchjournal.com
Received: 25-06-2016
Accepted: 29-07-2016

डॉ. अरविन्द मैन्दोला
सह–आचार्य चित्रकला,
राजकीय महाविद्यालय, बून्दी,
राजस्थान, भारत

Correspondence
डॉ. अरविन्द मैन्दोला
सह–आचार्य चित्रकला,
राजकीय महाविद्यालय, बून्दी,
राजस्थान, भारत

गरदड़ा (बून्दी, राजस्थान) क्षेत्र के शैल–चित्र

डॉ. अरविन्द मैन्दोला

सारांश
रूप और अभिव्यक्ति दोनों ही कला के समान सर्वव्यापी हैं। प्रागैतिहासिक काल से आधुनिक काल की समकालीन कला इसी विकास क्रम को दर्शाती हैं। राजस्थान के बून्दी जिले से 70 किलोमीटर दूर गरड़दा के शैल–चित्र आदिम अवस्था की मूल सृजन प्रवृत्ति का परिणाम हैं। यहाँ के चित्र पाषाण कालीन युग का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन चित्रों से तात्कालीन मानव की अतः चेतना का ज्ञान होता है साथ ही इसकी संघर्षपूर्ण जीवन तथा विषमतम परिस्थियों में व्यक्त होने वाली मौलिक अभिव्यक्ति एवं सौन्दर्य–बोध का भी प्रमाण मिलता हैं। गरड़दा क्षेत्र के चित्रों से उसकी चेतना में निहीत सृजनशीलता, मौलिकता और सौन्दर्य बोध का भी ज्ञान मिलता हैं।

कूटशब्दः प्रागैतिहासिक, मौलिकता, सौन्दर्य बोध, संघर्षपूर्ण, अन्तश्चेतना, मनोवैज्ञानिक पक्ष, अर्न्तबोध, सुसम्बद्ध, पुराइतिहास, निश्चयात्मकता

प्रस्तावना
मानव विकास की जिस आदिम सांस्कृतिक अवस्था से कला का उद्भव सम्बद्ध माना जाता हैं, वह अवस्था आखेट की ही रही हैं। जिसके फलस्वरूप ही मानव ने पाषाण–अस्त्रों के निर्माण और कौशल द्वारा हिंसक पशुओं पर आधिपत्य प्रदान किया और उसी की अभिव्यक्ति चित्रों के माध्यम से हुई, आखेटक ही आदिम चित्रकार था और पशु–पक्षी एवं आखेटक दृश्य ही उसकी कला के सर्वप्रमुख विषय थे, यह तथ्य भारत, अफ्रीका, युरोप तथा आस्ट्रेलिया आदि विश्व के विभिन्न भू–भागों से उपलब्ध प्रागैतिहासिक शोध के आधार पर सामान्यतया स्वीकार किया जा चुका हैं। श्री अमरनाथ दत्त ने सिंघनपुर (भारत) के आखेट दृश्य पर टिप्पणी करते हुये भारतीय संदर्भ में लिखा हैं।
Hunting Scences form the subject of the earliest painting or sculpture by prehistoric men, so far known c.f. the Magdalenian painting of Europe, the Transvaal petroglyphs etc.
भारतीय प्रागैतिहासिक चित्रों में प्राप्त बहुसंख्यक आखेट दृश्य इस बात के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं कि, यहां भी नितान्त आदिम युग में आखेट अवस्था से ही चित्रण का प्रारम्भ हुआ और यहां के चित्रकारों की प्राचीनतम पीढी आखेटकों की ही थी।
अनेक विद्वानों द्वारा उपलब्ध–आखेट दृश्यों के आधार पर तत्कालीन महत्व की व्याख्या की है, जिसका अर्थ यह कि, पशुओं पर प्रभुत्व एवं आखेट में सफलता प्राप्त करने के आदिम विश्वास से ही ऐसे चित्रों का निर्माण उस समय किया जाता रहा होगा। इसके प्रमाण इस प्रकार के चित्रों से लगाया जा सकता है, कि आखेट दृश्यों के पास ही नृत्य के दृश्य भी बने हैं, जो आखेट की सफलता के बाद आनन्द में मग्न हैं।
गरदड़ा क्षेत्र के आखेट दृश्यों में कृषि जीवन का ही प्रमुख रूप से चित्रण हुआ हैं। इस युग के मानव की दो मुख्य चिंतायें थी। एक हिंसक पशुओं से आत्मरक्षा की, दुसरी जीवन यापन के लिये खाद्य सामग्री की निरन्तर उपलब्धि की। आखेट से इन दोनों का समाधान हो जाता था। अतः इस काल के मानव जीवन के संघर्ष की अभिव्यक्ति जब चित्रकला में हुई, तो यह स्वाभाविक ही था कि आखेट दृश्यों का विशेषतः आलेखन हो। प्राथमिक मानव जो उसकी उदर पुर्ति अधिक से अधिक मात्रा में अनेक दिनों तक कर सके, इसी कारण बारहसिंहा, बकरी, भैंसा, जंगली सुअर, हिरन आदि पशुओं के चित्र ही अधिकाशतः चित्रित हुये हैं।
यहां जिन शैलाश्रयों से शिला–चित्र उपलब्ध हुए हैं उन सभी में आखेट दृश्यों का प्रायः स्वतन्त्र रीति से अंकन हुआ हैं। इन दृश्यों में हिरन महिष, सूअर, हाथी, आदि पशु चित्रित है। इनके अतिरिक्त अनेक शैलाश्रयों में अज्ञात नाम पशुओं की आकृतियों भी चित्रित हैं, जो अस्पष्ट होने के कारण

जिनका नाम तक उल्लेख नहीं किया जा सकता हैं।

उक्त समय पशुओं का आलेखन उनकी स्वाभाविक मुद्राओं एवं गढ़न का ध्यान रखते हुये हुआ हैं एवं सभी आकार पार्श्वदृष्टि से या एक चश्मी रूप में चित्रित हुये हैं। सशक्त बाह्य–रेखा से ही उनके स्वरूप का बोध होता हैं। क्योंकि भीतरी अंश को या तो पूरक शैली से पूरी तरह से भर दिया गया है, या कहीं–कहीं आकारों में ज्यामीतिक आकार बनाये गये हैं। रेखा शैली में बने ये शैल–चित्र आलंकारिक या ज्यामीतिक आकार के रूझान को प्रकट करते हैं। आखेटक और आखेट दोनों प्रायः एक ही शैली में चित्रित किये गये हैं।

शैल–चित्रों के आखेट दृश्यों का संयोजन सामन्यतया व्यवस्थायुक्त और कलात्मक हैं। कहीं–कहीं उसमें विशेष रचना शक्ति या कल्पना के कारण विचित्रता और रहस्य का आभास होता हैं। पशुओं और आखेटक की आकृति अपेक्षाकृत अधिक लम्बी बनी हैं। आखेटक कहीं निरस्त्र, कहीं बिना फल वाले और कहीं कांटेदार फल वाले भाले लिये दिखाये गये हैं। धनुष–बाण द्वारा आखेट करने के भी दृश्यों का अंकन है। शिकारियों का चित्रण प्रायः गतिमय एवं स्वाभाविक मुद्राओं के साथ हुआ हैं। कहीं–कहीं भावभिव्यक्ति भी सहजता के साथ अंकित हो गयी है।

पशु–पक्षी तथा अन्य जीव

गरदड़ा के सघन वन क्षेत्र में प्रागैतिहासिक मानव के संघर्ष पूर्ण जीवन में वन्य जीवों, विशेषतः पशुवर्ग का कितना महत्वपूर्ण स्थान रहा हैं, इसका उल्लेख किया जा चुका हैं। आखेट–दृश्यों से अलग स्वतन्त्र चित्रण भी हमें देखने को मिलते हैं। चित्रण की उस अवस्था में भी आखेट का भाव निश्चय ही मानव के मन में रहा होगा। परन्तु मात्र शिकार के भाव से ही चित्रण किया गया, यह निश्चित करना उचित नहीं हैं। शिकार चित्रों में हिरन, भैंस, बैल, अधिक मात्रा में चित्रित किये हैं। जिसमें कुछ जाति विशेष के पशु मैत्री भाव से अंकित किये गये हैं, जिसके प्रमाण स्वरूप यहां से प्राप्त 'पक्षी सवार' एवं टाइगर सवार' नामक शैल–चित्र प्राप्त हुए हैं। इस क्षेत्र में कुछ गुफाऐं और शैलाश्रय ऐसे हैं, जहां मानव निवास की कल्पना ही नहीं की जा सकती हैं, परन्तु वहां पर भी पशुओं का व्यापक चित्रण मिलता हैं। इन सभी तथ्यों से स्पष्ट हैं कि यहां के आदिमानव ने मात्र क्षुधा–पुर्ति के लिए शिकार और चित्रण नहीं किया, अपितु मानव मन के अचेतन में व्याप्त सौन्दर्य अभिव्यक्ति की चाह एवं संजाने की प्रकृति से भी चित्रण कार्य किया हैं। इसके अतिरिक्त भयजन्य–पूजाभाव, जो मानव मन के मूल में हैं, इस प्रकार की कोई न कोई भावना निहित रही होगी, जिससे हिसंक–पशु मृत्यु के साक्षात् प्रतीक बनकर, कभी प्रतिहिंसा के कारण मानव मन में कभी भय या बलि से प्राप्त वरदान की भावना उत्पन्न होती रही होगी। जिसके प्रतिस्वरूप प्रागैतिहासिक मानव ने चित्रण कार्य किया। गरदड़ा क्षेत्र में पशुओं के यर्थाथ रूप–चित्रण में जितनी विविधता और जटिल संयोजन प्राप्त होता हैं, उन्हें देखकर कहा जा सकता हैं कि तत्कालीन सामाजिक संगठन जटिल था, और प्रतीक रूप में पाये गये चिन्ह, सभ्यता के विकास क्रम को दर्शाते हैं। यहां के शैल–चित्रों की आकृतियं भिन्नता से चित्रित हुई हैं, विविधता और रचना कौशल एवं अंलकरण के कारण यहां के शैल–चित्र अति सुन्दर माने जा सकते हैं। यहां के चित्रों में पशु और मानव का अंकन प्रायः समान परिणाम और समान शैली में हुआ हैं।

पशुओं की तुलना में पक्षियों और सरीसृपों का चित्रण कम हुआ हैं। यहां शिकार के दृश्यों के अतिरिक्त यहां बकरी, सांप, सरीसृप, बिच्छु, घोड़ा जैसी आकृतियां देखने को मिलती हैं। जो भारत में अन्य स्थानों से प्राप्त शैल–चित्रों से प्राप्त नहीं हुये हैं। पक्षियों एवं अन्य जीवों का अंकन भी पशुओं की तरह ही सजीव एवं स्वाभाविक मुद्रा से हुआ हैं।

सन्दर्भ

1. ऑर्कियालॉजी एण्ड सोसायटी– पृ. 22
2. प्रागैतिहासिक मानव और संस्कृतियाँ, पृ. 16
3. बून्दी जिला दर्शन, निदेशालय सूचना जनसम्पर्क, जयपुर
4. स्त्रोतः– दुर्गा प्रसाद माथुर का लेख ''दैनिक अंगद'', बून्दी
5. प्रिहिस्टोरिक रिलीजन, पृ.–15